❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 46 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 सितम्बर, 2021 से रविवार 3 अक्तूबर, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली में लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी से मिला आर्यसमाज का शिष्ट मंडल : शिष्टाचार भेंट के अवसर पर

आर्य मैरिज वैलिडेशन एक्ट-1937 में संशोधन-परिवर्धन एवं परिवर्तन को लेकर हुई चर्चा

आर्यसमाज के नाम पर धोखा देने वाली अवैध संस्थाओं से युवाओं को बचाने के लिए कड़ा कदम उठाने आवश्यकता

28 सितम्बर, 2021, नई दिल्ली। भारत से जातिवाद के रोग को समाप्त करने हेतु आर्य समाज के प्रभाव से भारत सरकार द्वारा आर्य मैरिज वैलिडेशन एक्ट 1937 का प्रावधान किया गया था जिसके अनुसार प्रत्येक युवक-युवती अपने गुण कर्म स्वभाव के अनुसार बिना किसी जाति बन्धन के विवाह करने के लिए स्वतंत्र है। अत: आर्य समाज द्वारा लगातार कानून के अनुसार अंतर्जातीय विवाह संस्कार सम्पन्न कराए जाते हैं। इसके पीछे आर्य समाज की भावना यही है कि भारत देश में वैदिक धर्म के अनुसार वर्ण व्यवस्था लागू हो और जातिवाद पूरी तरह से समाप्त हो।

भारत की राजधानी दिल्ली और एनसीआर तथा अन्य अनेक स्थानों पर आर्य समाज के नाम पर फर्जी आर्य समाज बनाकर अवैध तरीके से विवाह संस्कार संपन्न कराने की सूचना दिल्ली सभा को पिछले काफी दिनों से लगातार प्राप्त हो रही थी, इसकी रोकथाम के लिए सभा द्वारा पूरा प्रयास किया गए, दिल्ली हाई कोर्ट में केस भी किया, कुछ अनधिकृत आर्यसमाजों पर रोक भी लगी, किन्तु धूर्त लोग बाज नहीं आए, तब दिल्ली सभा ने इन तमाम धोखेबाजों जो विवाह के नाम पर युवाओं को भ्रमित करके बेमेल, अवैध, बिना जांच पड़ताल किए विवाह कराकर आर्य समाज को बदनाम कर रहे हैं उन पर अंकुश लगाने हेतु लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी को आर्य मैरिज एक्ट में संशोधन और परिवर्तन करान सम्बन्धी पत्र लिखकर निवेदन किया।

लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी के दिल्ली आवास पर पहुंचकर स्मृति चिह्न भेंट करते दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, मन्त्री श्री कृपाल सिंह आर्य जी, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्ढा जी। इस अवसर पर माननीय श्री ओम बिरला जी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से ज्ञापन पत्र भी सौंपा गया।

आर्यसमाज द्वारा संचालित आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की प्रतिभावान छात्रा डॉ. पॉड्डिशेट्टी श्रीजा ने

संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा की उत्तीर्ण : फहराया सफलता का परचम

20 रैंक
डॉ. पॉड्डिशेट्टी श्रीजा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से दिल्ली में स्थापित आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के अन्तर्गत सिविल सेवा की तैयारी कर रही छात्रा डॉ. पॉड्डिशेट्टी श्रीजा ने संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी)- 2020-21 की परीक्षा में 20वीं रैंक के साथ अदभुत सफलता प्राप्त करके कीतिमान स्थापित किया है, इसके लिए सम्पूर्ण आर्य जगत डॉ. पॉड्डिशेट्टी श्रीजा कोहार्दिक शुभकामनाएं और बधाई प्रदान करता है।

ज्ञातव्य है कि 'आर्य प्रतिभा विकास संस्थान' आर्य समाज की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत वर्ष 2018 में आरम्भ की गई एक दूरदर्शी परियोजना है, जोकि मुख्य रूप से देश के आदिवासी और दूरदराज के क्षेत्रों में गरीब, वंचित, असहाय, दलितों

- शेष पृष्ठ 5 पर

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के 95वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर विशेष विचार गोष्ठी सम्पन्न

महर्षि दयानन्द ने दूर कीं समाजिक कुरीतियां : अभी और कार्य करने की आवश्यकता

- गंगा प्रसाद, महामहिम राज्यपाल, सिक्किम

95वें वार्षिक अधिवेशन एवं विशेष विचार गोष्ठी के अवसर पर मंचस्थ श्री गंगा प्रसाद (राज्यपाल सिक्किम), प्रधान संजीव चौरसिया, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य, बिहार सभा के मन्त्री आचार्य व्यासनन्दन शास्त्री एवं कोषाध्यक्ष श्री सत्यदेव प्रसाद गुप्ता।

- विस्तृत समाचार एवं चित्र पृष्ठ 5 पर

सिविल सेवा प्रतियोगी कृपया ध्यान दें!

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा की तैयारियों के लिए आर्य समाज की एक पहल

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान
सुशीलराज आर्य प्रतिभा केन्द्र, हरि नगर, नई दिल्ली

सिविल सेवा परीक्षा 2021-22 के लिए पंजीकरण आरम्भ

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवा केन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो सिविल सर्विसिज परीक्षा में भाग लेना चाहते हैं किन्तु आर्थिक एवं मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव के कारणों से परीक्षा की तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर। आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों से शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा की तैयारियों के प्रशिक्षण की घोषणा की गई है। संस्थान द्वारा चयनित अभ्यर्थियों को दिल्ली में छात्रावास, कोचिंग, प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन सहित सभी सुविधायें नि:शुल्क प्रदान की जायेंगी। इस नि:शुल्क सेवा का लाभ उठाने के इच्छुक उम्मीदवार www.pratibhavikas.org ऑनलाइन आवेदन करें। आवेदन की अन्तिम तिथि 20/10/2021 है।

ऑनलाइन आवेदन की अन्तिम तिथि 20/10/2021

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-
मो. 9311721172, Email : dss.pratibha@gmail.com

नोट : समस्त सम्मानीय पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि इस सूचना को विभिन्न सोशल माध्यमों से अधिकाधिक प्रचारित-प्रसारित करें।

देववाणी-संस्कृत

संसार में सब मनुष्य समान हैं

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः।।-ऋ. 5/60/5
ऋषिः श्यावाश्व आत्रेयः।। देवता-मरुतो वाग्निश्च।। छन्दः निचृत्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ-अज्येष्ठासः= जिनमें कोई बड़ा नहीं है और **अकनिष्ठासः**= जिनमें कोई छोटा नहीं है, ऐसे **ऐते**= ये सब **भ्रातरः**= परस्पर भाई **सौभगाय सं वावृधुः**= उत्तम ऐश्वर्य के लिए मिलकर उन्नति करने वाले हैं। **एषाम्**= इन सबका **युवा पिता**= सदा युवा पिता **स्वपा रुद्रः**= कल्याण कर्म करने वाला रुद्र परमेश्वर है और **मरुद्भ्यः**= इन मरुतों मनुष्यों के लिए **सुदिना**[1]= सुख देने वाली **सुदुघा**= उत्तम दूध देने वाली माता **पृश्निः**= प्रकृति है।

विनय-संसार-भर के सब मनुष्य (मरुत) परस्पर भाई-भाई हैं। मनुष्यमात्र एक ही माता-पिता के पुत्र हैं। संसार के किसी देश के एक कोने में रहने वाले मनुष्य के उसी तरह पिता ''रुद्र'' =परमेश्वर है और माता ''पृश्नि''=प्रकृति है जैसे किसी दूसरे कोने में रहने वाले के। मनुष्य होने की दृष्टि से इनमें न कोई बड़ा है और न छोटा है। काले-गोरे, हब्शी और सभ्य, पूँजीपति और श्रमी, पौर्वात्य और पाश्चात्य, ब्राह्मण और अछूत, हिन्दू और मुसलमान, जापानी या अमेरिकन, अंग्रेज या हिन्दुस्तानी, नागरिक व देहाती, सब-के-सब एक-समान परस्पर मनुष्य-भाई हैं। इनमें ऊँच-नीच मानना अज्ञान है। मनुष्य की दृष्टि से छोटा-बड़ा मानना अनुचित है। संसार-भर के मनुष्यों का ''मरुत् देवो'' की तरह उत्तम कल्याण के लिए मिलकर यत्न करना चाहिए, मिलकर संसार में मनुष्यता की उन्नति करनी चाहिए। जब मनुष्य-मनुष्य आपस में घृणा करते हैं, भिन्न-भिन्न देश के वासी होने से या भिन्न-भिन्न धर्मावलम्बी होने से लड़ते हैं, एक-दूसरे का तोपों-बन्दूकों और जहरीली गैसों से घात करते हैं, छोटे-बड़े का अभिमान कर एक-दूसरे का अत्याचार करते हैं, तब वे अपने एक-समान पिता-माता को भूल जाते हैं। क्या अंग्रेज भाइयों को पैदा करनेवाला प्रभु और है और भारतवासियों का और? वह एक ही रुद्र हम सब मरुतों का पिता है। वह कभी वृद्ध न होने वाला, कभी न मरनेवाला पिता है। वह हम सबके लिए कल्याण कर्म करने वाला पिता है और हम सबकी माता यह प्रकृति है जो हमारे लिए उत्तम ऐश्वर्यों का दूध प्रदान कर रही है। तथा हमें सब सुख पहुँचा रही है। आओ! हम इन सब झूठे भेदभावों को भूलकर-काला-गोरा, पूँजीपति-श्रमी, छूत-अछूत, इस देशवासी और उस देशवासी, इन सब भेदों को भूलकर-हम सब मनुष्य, सब-के-सब मनुष्य, मिलकर मनुष्यमात्र के हित का ध्यान करें; एक-दूसरे के हित का ध्यान करें। अपने शोभन कर्म करने वाले अमर पिता के आशीर्वाद को पाते हुए और करुणामयी सुखदात्री माता द्वारा अपनी सब कामनाएँ पूरी करते हुए अपनी उन्नति का साधन करें और भाई-भाई की तरह एक-दूसरे की सहायता करते हुए मनुष्यता के उद्देश्य की पूर्त्ति में बढ़ते जाएँ।

1. सुदिन इति सुखनामसु पठितम्।

वेद-स्वाध्याय

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

देश में अवैध धर्मांतरण का मौलाना धंधा कब तक?

आपने अवैध सम्बन्ध सुने होंगे, अवैध रिश्ते, अवैध कब्जे, अवैध संतान अवैध वीजा, अवैध पासपोर्ट और भी कई ऐसी चीजें है जिन्हें अवैध कहा जाता है। लेकिन कुछ सालों से देश में अवैध धर्मांतरण शब्द भी सुनाई दे रहा है। अभी हाल ही में अवैध धर्मांतरण का ये शब्द उस समय प्रचलन में आया जब धर्मांतरण के खिलाफ यूपी सरकार ने एक प्रसिद्ध मौलाना कलीम सिद्दीकी समेत तीन और लोगों को किया गिरफ्तार किया इससे पहले मौलाना उमर गौतम को भी गिरफ्तार किया था।

अगर देखना हो अवैध धर्मांतरण कैसे चलता है, तो सबसे पहले चलते हैं फुलत मदरसा। क्योंकि मौलाना कलीम का हैडऑफिस यानि फुलत मदरसा यही है। राजधानी दिल्ली से करीब 100 किमी दूर उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में बसे इसी फुलत गाँव में अवैध धर्मांतरण के मुख्यालय फुलत मदरसे में आजकल सन्नाटा है। दिल्ली-हरिद्वार हाईवे में खतौली बाईपास से सटे इस गांव की आबादी करीब साढ़े सात हजार है। इस गाँव में 72 प्रतिशत लोग मुस्लिम समुदाय से हैं। गाड़ी में बैठे बैठे दूर से ही फुलत मदरसा और मस्जिद दिखाठ देने लगती है।

गांव के बाहर ही जामिया इमाम वलीउल्लाह इस्लामिया का बड़ा-सा बोर्ड लगा है, दूसरा बोर्ड दारूल उलूम राहीमिया के नाम से लगा है। यह वही फुलत गांव है, जहां से निकलकर मौलाना कलीम सिद्दीकी ने देशभर में मजहबी तालीम के नाम पर शोहरत पाई। यहाँ तक कि कुछ दिन पहले ही मुंबई में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के साथ मंच भी साझा किया।

इसी फुलत गांव में 1958 जन्मे कलीम के पिता मोहम्मद अमीन किसान थे। साथ ही आसपास के गांवों में मजहबी शिक्षा का प्रसार-प्रचार भी करते थे। गांव में पुराने मदरसे फैजुल इस्लाम में भी आते-जाते थे। अपनी पढ़ाई करने के बाद अपने अब्बू के साथ 1980 के दशक में पुराने मदरसे में जाने लगे और 1990 आते आते कलीम बन गया मौलाना कलीम और अपने नए मदरसे की नींव रख ली। 3 साल में मदरसा बनकर तैयार हुआ। मौलाना कलीम ने उसका नाम रखा जामिया इमाम वलीउल्लाह इस्लामिया और इसी मदरसे ने मौलाना कलीम को देशभर में मजहबी शिक्षा का स्कॉलर बना दिया।

वैसे बगदादी भी मजहबी शिक्षा का स्कॉलर था और लादेन भी स्कॉलर ही था। हाफिज सईद के भी पाकिस्तान में सैंकड़ों मदरसे हैं। इसके अलावा तालिबान का सर्वोच्च लीडर मुल्ला अखुंद भी मजहबी शिक्षा का स्कॉलर है। और अनस हक्कानी भी। खैर 1990 के दशक में यह मदरसा 55 बीघा जमीन पर फैला था। फिर धीरे-धीरे मदरसे ने अंगड़ाई ली, अपने पैर फैलाये और आज ये मदरसा 200 से अधिक बीघा जमीन में है।

इसी मदरसे से कलीम सिद्दीकी राजस्थान और हरियाणा के फरीदाबाद, पलवल, गुरुग्राम आदि इलाकों में मुस्लिम युवाओं को भेजकर तंत्र-मंत्र के जरिए लोगों का ब्रेनवास कराने के आरोप है। या कहो यहीं से किसी अलवर के रहने वाले मेमचंद को मोहम्मद अनस बनाना इसका खेल हो गया। अब ये ब्रेनवास कैसे होता है इसमें एक आदमी सामने आया नाम है अरविन्द कश्यप। बताया जा रहा है कलीम के बंगाली बाबा बने गुर्गों को अरविन्द मिल गया। उन्होंने कलीम को सपना बेचा कि अगर तू इस्लाम में आएगा तो इसके बदले तुझे दस लाख रुपये मिलेंगे और एक सुन्दर बीवी अभी मिल जाएगी। अरविन्द मान गया तो ये लोग इसे लेकर मौलाना कलीम सिद्दक़ी

.....सिर्फ अरविन्द ही नहीं पिछली जुलाई में नैनीताल के युवक नितिन पन्त के इस्लाम कबूलने का मामला सुर्खियों में आया था। 2010 से नितिन पंत का ब्रेन वाश करने का काम शुरू हुआ था। इसके बाद राजस्थान स्थित भिवाड़ी में पन्त को हिन्दू से मुस्लिम बनाया गया और मेवात में मदरसे में लाकर उसे इस्लामिक तौर तरीके सिखाये गए। बताया जा रहा है कि नितिन पन्त अकेला नहीं था, उसके साथ कई हिन्दू युवक-युवतियां और भी थे, जिन्हें विदेशों में नौकरी दिलाने के लालच में मुस्लिम बनाया गया था। इस्लामीकरण के इस काम में मौलाना कलीम सिद्दीकी के बेटे अहमद और असद उनकी बेटियां आसमां और मसमां भी शामिल रहती हैं। नितिन पन्त जब हाल ही में उनके चंगुल से निकला तो उसने बालाजी घाट, सहारनपुर में किसी अतुल तुली के सानिध्य में हिदू धर्म में वापसी की थी। .....

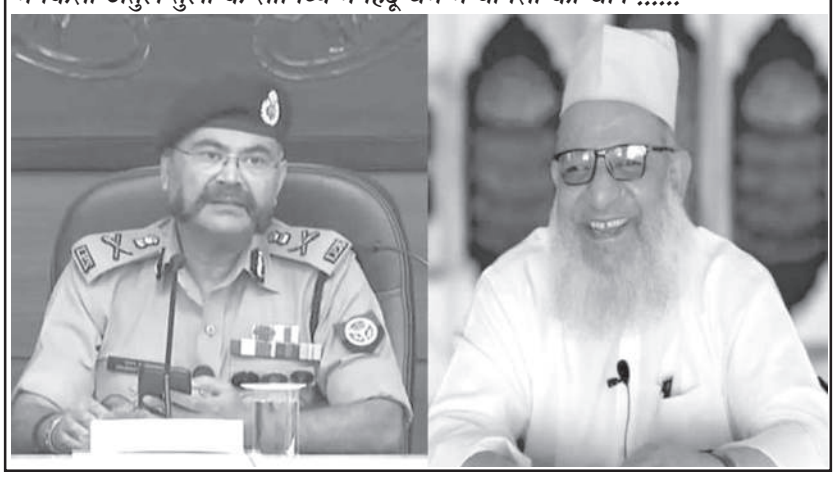

के पास गये। सिद्दक़ी ने शिकार को फटाफट कलमा पढ़ाकर उसका नाम बदलकर उसे अरविन्द से अकबर बना दिया।

अब अकबर ने कुछ दिन इंतजार किया जब मौलाना कलीम दस लाख रूपये और बुर्के में खातून लेकर हाजिर नहीं हुआ तो अकबर पहुंचा हिन्दू जागरण मंच के पास। उन्होंने फिर से अकबर को अरविन्द बनाया और कलीम के खिलाफ शिकायती पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई।

पर तब तक पुलिस के हाथ कोई ठोस सबूत नहीं था। पुलिस ने भी सोचा होगा कि जिसने पैसे के लालच में अपना धर्म बेच दिया हो उसकी क्या सुनवाई करनी। लेकिन अचानक जून महीने में मौलाना उमर गौतम को आठ अन्य लोगों के साथ उत्तर प्रदेश पुलिस ने धर्मांतरण रैकेट चलाने के आरोप में गिरफ्तार किया। गिरफ्तारी के बाद, यूपी पुलिस ने सूचित किया था कि रैकेट में मूक-बधिर बच्चों और महिलाओं का इस्लाम में धर्मांतरण शामिल है। 1000 से अधिक लोगों को परिवर्तित किया गया। पुलिस ने बताया कि पूछताछ के दौरान गिरफ्तार आरोपियों ने हर साल करीब 250 से 300 लोगों को इस्लाम में धर्मांतरित करने की बात कबूल की। जब उत्तर प्रदेश पुलिस ने उमर गौतम से अपने ढंग से पूछताछ की सामने आया मौलाना कलीम नाम। एटीएस ने जाँच शुरू की तो पाया कि मौलाना कलीम सिद्दीक़ी का वास्ता धर्मांतरण के बड़े गिरोह से है और मेरठ से फुलत जाते हुए कलीम को गिरफ्तार कर लिया गया।

लखनऊ में मौलाना की गिरफ़्तारी की बात की पुष्टि हुई और अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार ने मौलाना की संस्थाओं पर अवैध तरीक़े से विदेशी फंडिंग के भी आरोप लगाए।

- शेष पृष्ठ 7 पर

अश्विन नवरात्र के अवसर पर विशेष आलेख

जीवन का हर दिन है नवरात्र

.....नवरात्र शब्द पर भी अगर विचार किया जाए तो 'नव' शब्द संस्कृत का शब्द है, इस 'नव' शब्द का एक अर्थ तो है 9 संख्या और दूसरा अर्थ है नवीनता। प्रत्येक मानव शरीर के अंदर 9 छिद्र होते हैं और कोई भी व्यक्ति उन छिद्रों से दुर्गंध ही छोड़ता है, जब वातावरण को हम सब अपवित्र करते हैं उसको पवित्र करने के लिए हमें प्रयासरत रहना चाहिए। और नव , 9 शब्द हमें नित नूतन नवीन रहने की प्रेरणा प्रदान करता है, नवीन तन से, मन से, विचारों से, चिंतन मनन से, बुद्धि से, बल से, हमें अपने जीवन को नित नूतन रखना चाहिए, इसके लिए नई सोच, नई खोज, नई चाह, नई राह अपनानी चाहिए।.....

....वेद का संदेश है- ये नयन्ति परावतम, जो बीत गया, जो चला गया उसको सोच-सोचकर निराश नहीं होना, जो वर्तमान में चल रहा है उसका स्वागत करना है। रात्र, रात्रि का अर्थ है जो आराम देती है, विश्राम देती है, नयापन अर्थात तरोताजा करती है, शक्ति बढ़ाती है, वह रात्रि है। दिनभर के थके हुए जब घर जाकर रात्रि में विश्राम करते हैं तो सुबह को जो ताजगी का अहसास होता है वह रात्रि होती है। ....

अक्सर यह प्रश्न बार-बार सामने आता है कि क्या आर्य समाज नवरात्र का पर्व मनाता है अथवा नहीं मनाता? और अगर नहीं मनाता है तो क्यों नहीं मानता? इसके पीछे क्या कारण है? तो इसका सीधा-सा उत्तर है कि आर्य समाज वर्ष में दो बार ऋतु परिवर्तन के समय 9 दिन तक अन्न न ग्रहण करके, अन्न के स्थान पर उससे भी ज्यादा आहार ग्रहण करने वाले, माता के जागरण के नाम पर बड़े-बड़े लाउड स्पीकर लगाकर दुनिया की नींद खराब करने वाले, बीमारी से ग्रस्त लोगों को जागरण के भोंपुओं की आवाज सुना-सुनाकर और ज्यादा बीमार करने वाले आयोजनों के रूप में नवरात्रों का पर्व नहीं मानता। और न ही इस तरह के पर्वों के मनाने का कोई औचित्य है।

हां, जब गर्मी के बाद सर्दी का मौसम आता है या शर्दी के बाद गर्मी की शुरुआत होती है तो उस मौसम परिवर्तन के समय शरीर की शुद्धि के लिए, बामारी से बचने के लिए उपवास आदि रखना, हल्का सुपाच्य भोजन ग्रहण करने से आर्य समाज परहेज नहीं करता, लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि हम वर्ष में दो बार नवरात्र पर्व मनाने के पक्षधर बन गए। हमारे यहां तो पंच महायज्ञ विधि में शरीर की शुद्धि, मन की शुद्धि, आत्म उत्थान के लिए, जप, तप, साधना के साथ-साथ वातावरण की शुद्धि का पूरा विधि-विधान है और वह भी केवल नौ दिनों के लिए या वर्ष में दो बार होने से अठारह दिनों के लिए नहीं बल्कि प्रतिदिन के लिए व्यवस्था बनाई गई है। जिसका आर्यजन निष्ठा पूर्वक निर्वाह करते आए हैं।

जो लोग प्रतिदिन दुर्गुण दुर्व्यसनों में फंसे रहते हैं, वे नवरात्र के दिनों में प्याज लहसुन तक खाना छोड़ देते हैं, और वे लोग एक-दूसरे से कहते भी हैं कि इन दिनों में कुछ भी गलत नहीं खाना-पीना, कुछ भी गलत आचरण और व्यवहार नहीं करना चाहिए, क्योंकि ये नवरात्र के दिन हैं। जब नवरात्र समाप्त ही जाते हैं तो वे लोग फिर से अपने पुराने ढर्रे पर चलना शुरू कर देते हैं। वे लोग कोई भी नया कार्य करने में मुहूर्त आदि का विचार करते हैं, उनका कहना होता है कि इन नवरात्र के दिनों में मुहूर्त देखने दिखाने की जरूरत नहीं है, इन दिनों में सब कुछ शुभ ही शुभ है।

आर्य समाज की मान्यता के अनुसार प्रतिदिन एक नया दिन है, प्रतिदिन एक नया जीवन है, इसलिए अपनी दिनचर्या को आदर्श दिनचर्या बनाएं, समय से जागें समय से सोएं, समय से योगासन-व्यायाम करें, मौसम के अनुरूप ऋतभुक, मितभुक, हितभुक के अनुसार आहार ग्रहण करें, प्रतिदिन ईश्वर की उपासना करें, यज्ञ करें, माता-पिता की सेवा करें।

हर दिन शुभ दिन है, हर दिन महत्वपूर्ण है, समय का सदुपयोग ही दिन को महत्वपूर्ण बनाता है, इसलिए समय का सदुपयोग करें, किसी शुभ मुहूर्त के चक्कर में न पड़ें, शुद्ध सात्विक आहार ग्रहण करें, भूख से थोड़ा कम खाएं, स्वाद पर नियंत्रण रखें, स्वास्थ्य के लिए खाएं, केवल नवरात्र में नियमानुसार चलने से सफलता नहीं मिलती, हमेशा नियम पूर्वक गतिशील रहने से प्रगति होती है। इसलिए साल के 365 दिन हमारी दिनचर्या व्यवस्थित और अनुशासित होनी चाहिए।

नवरात्र शब्द पर भी अगर विचार किया जाए तो 'नव' शब्द संस्कृत का शब्द है, इस 'नव' शब्द का एक अर्थ तो है 9 संख्या और दूसरा अर्थ है नवीनता। प्रत्येक मानव शरीर के अंदर 9 छिद्र होते हैं और कोई भी व्यक्ति उन छिद्रों से दुर्गंध ही छोड़ता है, जब वातावरण को हम सब अपवित्र करते हैं उसको पवित्र करने के लिए हमें प्रयासरत रहना चाहिए। और नव , 9 शब्द हमें नित नूतन नवीन रहने की प्रेरणा प्रदान करता है, नवीन तन से, मन से, विचारों से, चिंतन मनन से, बुद्धि से, बल से, हमें अपने जीवन को नित नूतन रखना चाहिए, इसके लिए नई सोच, नई खोज, नई चाह, नई राह अपनानी चाहिए। वेद का संदेश है- **ये नयन्ति परावतम,** जो बीत गया, जो चला गया उसको सोच-सोचकर निराश नहीं होना, जो वर्तमान में चल रहा है उसका स्वागत करना है। रात्र, रात्रि का अर्थ है जो आराम देती है, विश्राम देती है, नयापन अर्थात तरोताजा करती है, शक्ति बढ़ाती है, वह रात्रि है। दिनभर के थके हुए जब घर जाकर रात्रि में विश्राम करते हैं तो सुबह को जो ताजगी का अहसास होता है वह रात्रि होती है।

आर्य समाज की वैदिक मान्यता यही है कि प्रतिदिन एक नया दिन है, हर रात्रि एक नई रात्रि है, इसलिए केवल नवरात्र में विशेष 9 दिनों तक दिखावा करने से कुछ नया नहीं घटने वाला, हर दिन को नया दिन मानिए, पूरी योजना के साथ जीवनयापन कीजिए, वेदों के अनुसार अपनी दिनचर्या बनाइए, महापुरुषों से प्रेरणा लीजिए, उनके जीवनवृत पढिए, स्वाध्याय कीजिए, सत्संग कीजिए, अपने आहार, विचार, आचरण और व्यवहार को ठीक रखिए, जीवन खुशियों से महक उठेगा। - ***आचार्य अनिल शास्त्री***

प्रथम पृष्ठ का शेष **आर्य मैरिज वैलिडेशन एक्ट-1937 ....**

और आदिवासी छात्रों के लिए काम करने हेतु प्रतिबद्ध है। आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की योजना छात्रों को आईएएस, आईपीएस जैसी प्रशासनिक सेवाओं और ऐसे ही अन्य पदों पर नियुक्ति हेतु यूपीएससी द्वारा आयोजित परीक्षा के लिए तैयार करने की एक पहल है। संस्थान में नामांकन के लिए आवेदन करने वाले छात्रों का मूल्यांकन उनके उत्साह, राष्ट्रवादी भावना और मानवीय मूल्यों के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता के आधार पर किया जाता है।

हमारा उद्देश्य छिपी हुई प्रतिभा की तलाश करना है। हम प्रत्येक ऐसे महत्वाकांक्षी विद्यार्थी को हर संभव सहायता प्रदान करते हैं जिसमें राष्ट्र सेवा और मानव सेवा करने की दृढ़ इच्छा और क्षमता हो। संसाधनों की कमी के कारण देश की सेवा करने की क्षमता और दूरदृष्टि रखने वाला कोई भी उम्मीदवार पीछे नहीं रहेगा। आर्यजनों को जानकर हर्ष होगा मात्र 3 वर्ष के अल्प समय में ही आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के माध्यम से कोचिंग प्राप्त करने वाले 7 विद्यार्थी ने यू.पी.एस.सी. की परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करके विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएं दे रहे हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजनाओं के लिए सहयोग/दान अब और भी आसान: QR कोड स्कैन करते ही होगा भुगतान

आपको जानकर हर्ष होगा कि बैंक द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को डिजिटल पेमेंट हेतु कोड़ जारी किया गया है। अब आप किसी भी पेमेंट माध्यम - पेटीएम, फोन पे, गूगल पे, मास्टर/वीजा रुपये, भीम पे - से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किसी भी योजना/प्रकल्प के लिए सहयोग एवं दान राशि का भुगतान केवल मात्र क्यू.आर. कोड को स्कैन करके कभी भी-कहीं से भी कर सकते हैं।

आप इस कोड के माध्यम अपने आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियों का भी भुगतान कर सकते हैं।

आप द्वारा इसके माध्यम से भेजी गई राशि तत्काल सभा को प्राप्त हो जाएगी। कृपया भुगतान करते ही आपके पास जो मैसेज आए उसका स्क्रीन शॉट लेकर अथवा सीधे उस मैसेज को 9540040388 पर व्हाट्एप्प अथवा टेलिग्राम कर दें, जिससे आपको तुरन्त रसीद जारी की जा सके।

- विनय आर्य, महामन्त्री
(9958174441)

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा मध्य प्रदेश में संचालित विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों का निरीक्षण

वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज की रही है अग्रणी भूमिका : आगे और भी बढ़ेगी

जे.बी.एम. से श्री विवेक आर्य इस पूरी यात्रा में रहे साथ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी के नेतृत्व में विशेष समाजसेवी श्री अरुण अग्रवाल, उनके सुपुत्र श्री अनिल अग्रवाल जी दो दिवसीय दौर पर सेवाश्रम के प्रकल्पों को देखने व नेतृत्व प्रदान करते हेतु म. प्र. के झाबुआ जिले में दिनांक 24 व 25 सितम्बर को पधारें।

इस दौरान महानुभावों ने महाशय धर्मपाल M.D.H दयानन्द आर्य विद्या निकेतन बामनिया, भामल, थान्दला, म. द. आर्य माध्यमिक विद्यालय कांकनवानी, म. द. सेवा प्रकल्प बालवासा का सघन दौरा किया। सभी स्थानों पर क्षेत्र के सवोश्रम के पदाधिकारी, शिक्षक, शिक्षिकायें, कर्मचारी तथा ग्रामीणजनों ने पारम्परिक तरीकों से ढोल-बाजों के साथ अतिथिजनों का स्वागत वंदन-अभिनन्दन किया। अधिकारियों द्वारा भी सभी स्थानों पर अतिथियों द्वारा क्षेत्र में कार्य कर रहे कार्यकर्त्ताओं का पुष्पमालाओं से स्वागत किया तथा अपने उद्बोधन में सेवाश्रम द्वारा चलाये जा रहे सेवा कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की तथा शिक्षा एवं स्वावलम्बन के क्षेत्र में बेहतर उन्नति के लिये सहयोग का आशीर्वचन दिया। अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ मध्य प्रदेश के अध्यक्ष श्री विश्वास सोनी, संचालक आचार्य दयासागर, कोषाध्यक्ष श्री गुलाबजी, आर्य सदस्य श्री कैलाश श्री कमलेश दातला, श्री मालसिंह भगत आदि ने भव्यता से स्वागत किया। इस पूरी यात्रा में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी (चेयरमैन जे.बी.एम. ग्रुप) के प्रतिनिधि के रूप में श्री विवेक आर्य जी साथ रहे।

दिल्ली के अनछुए क्षेत्रों में पहुंचने के लिए आर्यसमाज कृतसंकल्पित : सभा की ओर से विभिन्न प्रकल्पों के द्वारा

दलित बस्तियों, झुग्गी-झोपड़ियों में हो रहें हैं - यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं वस्त्र वितरण कार्यक्रम

प्रकल्पों को एक दूसरे के पूरक बनाकर प्रान्तीय सभाओं के सहयोग से दिल्ली से बाहर भी होंगे सेवा कार्य

'सहयोग' प्रकल्प और 'घर-घर यज्ञ' प्रकल्प एक दूसरे के पूरक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कार्यरत वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के माध्यम स्थान स्थान पर यज्ञ, घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' द्वारा वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति हेतु वस्त्रों व शिक्षा हेतु किताबों, खिलोनों का वितरण किया जा रहा है। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

दिनांक 17.09.21 को बस्ती विकास केंद्र, चूना भट्टी, क्लस्टर कालोनी कीर्ति नगर नई दिल्ली में यज्ञ एवं वस्त्र वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में यज्ञ कार्य हवन उत्थान जन कल्याण समिति के माध्यम से किया गया।

पृथ्वी से भारी क्या- महाभारत में जब यक्ष ने ज्येष्ठ पांडू पुत्र युधिष्ठिर से ये प्रश्न किया तो उसे उत्तर मिला कि पृथ्वी से भारी है "माँ"!

जी हाँ, माँ ही है जो पृथ्वी से भारी है क्योंकि जिस तरह पृथ्वी वातावरण का पोषण करती है उसी तरह एक माँ अपनी संतान का पोषण करती है। वो एक ऐसी पीड़ा सहन करती है जो असहनीय होती है। एक आदर्श संतान को उत्पन्न कर एक सभ्य समाज की स्थापना करती है। ये विचार यज्ञ ब्रह्मा शिवा शास्त्री जी ने यज्ञ में उपस्थित महानुभावों को सम्बोधित करते हुए कहा। यजमान के रूप में स्थानीय निवासी

दिनांक 18.09.21 को हनुमान मंदिर, जवाहर कैम्प, कीर्ति नगर नई दिल्ली में यज्ञ एवं वस्त्र वितरण कार्यक्रम हवन उत्थान जन कल्याण समिति एवं सहयोग के माध्यम से आयोजित हुआ। कार्यक्रम आयोजन में जय भवानी समिति नामक स्थानीय संस्था में सहयोग किया।

गणेश चतुर्दशी के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में श्री गणेश की कथा के माध्यम आचार्य दिनेश शास्त्री जी ने श्री गणेश के सत्य स्वरूप को लोगों को बहुत ही सहज भाषा में समझाया।

दिनांक 19.09.21 को शांति मुकुंद अस्पताल, दयानन्द विहार, पूर्वी दिल्ली में यज्ञ एवं वस्त्र वितरण का कार्यक्रम आर्य समाज सूरजमल विहार के सौजन्य से मुकुंद अस्पताल के पीछे कलस्टर कॉलोनी दयानन्द विहार में किया गया। कार्यक्रम की शुरुवात में लोग यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए झिझक रहे थे पर सुंदर मंत्रोच्चारण से सब लोग यज्ञ में आहुति अर्पित करने आने लगे।

कार्यक्रम के संयोजक श्री सुभाष ढींगरा जी थे। लॉयन्स क्लब ने भी हर बार की तरह इस कार्यक्रम में अपनी भूमिका निभाई। पुरोहित के रूप में आचार्य शिवा शास्त्री और श्री करण आर्य सहयोगी के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित थे। उन्होंने उपस्थित महानुभावों को सम्बोधित करते हुए कहा कि "संस्कार" व्यक्ति के जीवन की नींव है यदि यह समर्थ होगी तभी जीवन की ईमारत मज़बूत खड़ी होगी। आर्य समाज के घर घर यज्ञ हर यज्ञ का

- *जारी पृष्ठ 6 पर*

117वें जन्मदिवस (2 अक्तूबर) पर विशेष

अद्‌भुत साहस की प्रतिमूर्ति स्व. लाल बहादुर शास्त्री जी का प्रेरण स्मरण

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी से सात मील दूर एक छोटे से रेलवे टाउन, मुगलसराय जिसका वर्तमान नाम पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर है, वहां हुआ था। उनके पिता एक स्कूल शिक्षक थे। जब लाल बहादुर शास्त्री केवल डेढ़ वर्ष के थे तभी उनके पिता का देहांत हो गया था। उनकी माँ अपने तीनों बच्चों के साथ अपने पिता के घर जाकर बस गई। उस छोटे-से शहर में लाल बहादुर की स्कूली शिक्षा कुछ खास नहीं रही लेकिन गरीबी की मार पड़ने के बावजूद उनका बचपन पर्याप्त रूप से खुशहाल बीता। उन्हें वाराणसी में चाचा के साथ रहने के लिए भेज दिया गया था ताकि वे उच्च विद्यालय की शिक्षा प्राप्त कर सकें। घर पर सब उन्हें नन्हे के नाम से पुकारते थे। वे कई मील की दूरी नंगे पांव से ही तय कर विद्यालय जाते थे, यहाँ तक की भीषण गर्मी में जब सड़कें अत्यधिक गर्म हुआ करती थीं तब भी उन्हें ऐसे ही जाना पड़ता था।

बड़े होने के साथ-ही लाल बहादुर शास्त्री विदेशी दासता से आजादी के लिए देश के संघर्ष में अधिक रुचि रखने लगे। वे भारत में ब्रिटिश शासन का समर्थन कर रहे भारतीय राजाओं की महात्मा गांधी द्वारा की गई निंदा से अत्यंत प्रभावित हुए। लाल बहादुर शास्त्री जब केवल ग्यारह वर्ष के थे तब से ही उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कुछ करने का मन बना लिया था।

....लाल बहादुर शास्त्री ब्रिटिश शासन की अवज्ञा में स्थापित किये गए कई राष्ट्रीय संस्थानों में से एक वाराणसी के काशी विद्या पीठ में शामिल हुए। यहाँ वे महान विद्वानों एवं देश के राष्ट्रवादियों के प्रभाव में आए। विद्या पीठ द्वारा उन्हें प्रदत्त स्नातक की डिग्री का नाम 'शास्त्री' था लेकिन लोगों के दिमाग में यह उनके नाम के एक भाग के रूप में बस गया। .....रेल दुर्घटना पर लंबी बहस का जवाब देते हुए लाल बहादुर शास्त्री ने कहा; "शायद मेरे लंबाई में छोटे होने एवं नम्र होने के कारण लोगों को लगता है कि मैं बहुत दृढ नहीं हो पा रहा हूँ। यद्यपि शारीरिकरूप से में मैं मजबूत नहीं हूं लेकिन मुझे लगता है कि मैं आंतरिक रूप से इतना कमजोर भी नहीं हूँ।".....

गांधी जी ने असहयोग आंदोलन में शामिल होने के लिए अपने देशवासियों से आह्वान किया था, इस समय लाल बहादुर शास्त्री केवल सोलह वर्ष के थे। उन्होंने महात्मा गांधी के इस आह्वान पर अपनी पढ़ाई छोड़ देने का निर्णय कर लिया था। उनके इस निर्णय ने उनकी मां की सारी उम्मीदें तोड़ दीं थी। उनके परिवार ने उनके इस निर्णय को गलत बताते हुए उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन वे इसमें असफल रहे। लाल बहादुर ने अपना मन बना लिया था। उनके सभी करीबी लोगों को यह पता था कि एक बार मन बना लेने के बाद वे अपना निर्णय कभी नहीं बदलेंगें क्योंकि बाहर से विनम्र दिखने वाले लाल बहादुर अन्दर से चट्टान की तरह दृढ़ थे।

लाल बहादुर शास्त्री ब्रिटिश शासन की अवज्ञा में स्थापित किये गए कई राष्ट्रीय संस्थानों में से एक वाराणसी के काशी विद्या पीठ में शामिल हुए। यहाँ वे महान विद्वानों एवं देश के राष्ट्रवादियों के प्रभाव में आए। विद्या पीठ द्वारा उन्हें प्रदत्त स्नातक की डिग्री का नाम 'शास्त्री' था लेकिन लोगों के दिमाग में यह उनके नाम के एक भाग के रूप में बस गया। 1927 में उनकी शादी हो गई। उनकी पत्नी ललिता देवी मिर्जापुर से थीं जो उनके अपने शहर के पास ही था। उनकी शादी सभी तरह से पारंपरिक थी। दहेज के नाम पर एक चरखा एवं हाथ से बुने हुए कुछ मीटर कपड़े थे। वे दहेज के रूप में इससे ज्यादा कुछ और नहीं चाहते थे।

1930 में महात्मा गांधी ने नमक कानून को तोड़ते हुए दांडी यात्रा की। इस प्रतीकात्मक सन्देश ने पूरे देश में एक तरह की क्रांति ला दी। लाल बहादुर शास्त्री विह्वल ऊर्जा के साथ स्वतंत्रता के इस संघर्ष में शामिल हो गए। उन्होंने कई विद्रोही अभियानों का नेतृत्व किया एवं कुल सात वर्षों तक ब्रिटिश जेलों में रहे। आजादी के इस संघर्ष ने उन्हें पूर्णत: परिपक्व बना दिया।

आजादी के बाद जब कांग्रेस सत्ता में आई, उससे पहले ही राष्ट्रीय संग्राम के नेता विनीत एवं नम्र लाल बहादुर शास्त्री के महत्व को समझ चुके थे। 1946 में जब कांग्रेस सरकार का गठन हुआ तो इस 'छोटे से डायनमो' को देश के शासन में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए कहा गया। उन्हें अपने गृह राज्य उत्तर प्रदेश का संसदीय सचिव नियुक्त किया गया और जल्द ही वे गृह मंत्री के पद पर भी आसीन हुए। कड़ी मेहनत करने की उनकी क्षमता एवं उनकी दक्षता उत्तर प्रदेश में एक लोकोक्ति बन गई। वे 1951 में नई दिल्ली आ गए एवं केंद्रीय मंत्रिमंडल के कई विभागों का प्रभार संभाला रेल मंत्री; परिवहन एवं संचार मंत्री; वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री; गृह मंत्री एवं नेहरू जी की बीमारी के दौरान बिना विभाग के मंत्री रहे। उनकी प्रतिष्ठा लगातार बढ़ रही थी। एक रेल दुर्घटना, जिसमें कई

- शेष पृष्ठ 8 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्य समाज का अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों गौरवपूर्ण - विनय आर्य, उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नया टोला, पटना द्वारा दिनांक 26.09.2021 दिन रविवार को साधारण सभा एवं वैदिक विचार गोष्ठी का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। सभा का 95वाँ वार्षिक अधिवेशन भी धूमधाम से मनाया गया। इस पावन अवसर पर माननीय श्री गंगा प्रसाद जी, महामहिम राज्यपाल, सिक्किम, मुख्य अतिथ के रूप में पधारे। मुख्य वक्ता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के उपमंत्री व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य एवं मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद से संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन करके वैदिक विचार गोष्ठी का उद्‌घाटन किया। दोनों महानुभावों का अभूतपूर्व स्वागत किया गया।

गोष्ठी का विषय-देश की वर्तमान स्थिति में आर्यसमाज की भूमिका पर अपने वक्तव्य में मानवीय गंगा प्रसाद जी ने कहा कि आज देश आभ्यन्तर और बाह्यन्तर दोनों रूपों में सशक्त है किन्तु आन्तरिक रूप में हमें सजग रहने की आवश्यकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों के आधार पर अंधविश्वास, नारी शिक्षा, विधवा उत्थान के लिए सराहनीय कार्य किया। समाज में अंधविश्वास व पाखण्ड फैलता जा रहा है, ऐसी विषम स्थिति में एकमात्र आर्यसमाज ही समाज को पाखण्डमुक्त व समरसता के साथ वैदिक जीवन का रास्ता प्रशस्त कर सकता है। आवश्यकता है हम आर्यजन पूरी तन्मयता और निष्ठा से वैदिक विचारधारा का प्रचार-प्रसार करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री श्री विनय आर्य ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज का अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों गौरवपूर्ण हैं। हमें हताश और निराश होने की कतई आवश्यकता नहीं। उन्होंने स्वामी दयानन्द की राष्ट्रभक्ति पर बोलते हुए कहा कि जब रानी विक्टोरिया ने देश की जनता के समक्ष घोषणा की कि मैं तुम्हारा माता-पिता के समान पालन-पोषण करूँगी, तब महर्षि दयानन्द ने शंखनाद किया कि "कोई कितना भी क्यों न करे किन्तु स्वदेशी राजा सर्वोपरि व उत्तम होता है।" स्वराज्य के प्रथम उद्‌घोषक महर्षि दयानन्द और उनके क्रान्तिकारी विचारों ने देश को स्वतंत्र आज प्रतिनिधि सभा विचर पूरी तरह से इन कार्यों को करने में संलग्न है। उन्होंने सभा के अधिकारियों को, आर्य प्रतिनिधियों को वैदिक विचारों को फैलाने का आहवान किया।

विचार गोष्ठी के मुख्य वक्ता किया और सभी कार्यकर्त्ताओं और पदाधिकारियों को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि उन्नीसवीं सदी के सबसे प्रसिद्ध व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द थे। उनके बताये रास्ते पर चलने से समाज में शान्ति व समरसता की भावना परिपुष्ट होगी। समाज में भाई-चारे का सद्‌भाव वैदिक विचारों से ही होगा।

सभा मंत्री डॉ. व्यासनन्दन शास्त्री ने कहा कि सभी कालों में वेद की महत्ता रही है। इसलिए आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए सबको आगे आने की आवश्यकता है। आर्यसमाज के सिद्धान्त और महर्षि के वैदिक विचार सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सार्वदेशिक है। वेदों की प्रासंगिकता सभी युगों में रही है। सभा के कोषाध्यक्ष श्री सत्यदेव प्रसाद गुप्ता ने शिक्षा आयुक्त बिहार सरकार के पत्र तथा निबन्धन महानिरीक्षक, बिहार कार्यक्रम द्वारा प्रदत्त पत्रों को पढ़कर सुनाया तथा हमारी वर्तमान कमेटी को बिहार सरकार की ओर से मान्यता दी गई। इस आश्य की जानकारी सभी को दी। सभी ने करतल ध्वनि से हर्ष प्रकट किया। वैदिक विचार गोष्ठी में विचार रखने वालों में श्री अविनाश कुमार, समरजीत कुमार, माता धर्मशीला आर्या, कमलेश दिव्यदर्शी, डॉ. निर्मला, शान्तिकला आर्या, आचार्य सुशील, विनोद आर्य, राज कुमार आर्य, सुशील कुमार, सुधीर कुमार आर्य, विद्या भूषण आर्य प्रमुख हैं।

इस अवसर पर पुस्तक का लोकार्पण महामहिम राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद जी द्वारा "वैदिक पूजा विधि"पुस्तक का लोकार्पण किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार द्वारा सत्यार्थ प्रकाश, हिन्दू संगठन क्यों और कैसे?, वैदिक पूजा पद्धति (आचार्य ज्ञानेन्द्र शास्त्री द्वारा लिखित) पुस्तकों का नि:शुल्क प्रदान किया गया।

यज्ञोपरान्त सभा प्रधान डॉ. संजीव चौरसिया जी के कर कमलों द्वारा ओ३म् ध्वजारोहण साथ किया गया।

- डॉ. व्यासनन्दन शास्त्री, मंत्री
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

But Swami Dayanand could not forget this easily. It pained him to find that the Maharaja was not as good as he had expected. So he reproached him for his conduct in a very bold manner. He said, “Remem ber, O King, you are a man of great importance, but these per sons are low degree. A man of your position should not keep com pany with such persons." But he was not content with such persons." But he was not content with saying this much. On reaching his place of residence, he sent the Maharaja a letter. He explained to him the duties of a king. “O King," he wrote, “it is your duty to set a good example to your subjects, for you should know that they will follow in your footsteps. if you plant rose-trees they will do the same, but if you plant thorns they will also do the same."

This had the desired effect on the Maharaja. He therefore dismissed these persons from his service, among them being a woman. But she was a very wicked woman and felt this insult keenly. She also knew who was responsible for it. She therefore sought the help of some wicked persons in order to teach Swami Dayanand a lesson. They advised her to poison him. For some days she did not know how to do it. At last she ribed Swami Dayanand's cook. She asked him to administer a very deadly poison.

The cook was a very wicked man. He readily consented to take Swami Dayanand's life. So one day he mixed finely-ground glass with the sugar for Swami Dayanand's cup of milk.

No sooner did Swami Dayanand take it than he began to feel very bad. To began with, he had some pain in his stomach. Then he began to feel as if he were suffering from cholera. At last he found it difficult even to sit or stand. The pain became unbearable.

Very soon he learnt what the trouble was. So he sent for his cook, lagan Nath. As soon as he came into Swami Dayanand's presence, he began to beg for mercy. At this some of the disciples of Swami Dayanand demanded that he should be handed over to the police without any delay.

But Swami Dayanand did not feel like doing that. He said to them, “I do not know what you mean. It is true I am suffering from much pain, but this is the result of my own actions. What is to happen must happen. Why Should this man suffer? We should show mercy to him and he should be forgiven."

.....This had the desired effect on the Maharaja. He therefore dismissed these persons from his service, among them being a woman. But she was a very wicked woman and felt this insult keenly. She also knew who was responsible for it. She therefore sought the help of some wicked persons in order to teach Swami Dayanand a lesson. They advised her to poison him. For some days she did not know how to do it. At last she ribed Swami Dayanand's cook. She asked him to administer a very deadly poison.

The cook was a very wicked man. He readily consented to take Swami Dayanand's life. So one day he mixed finely-ground glass with the sugar for Swami Dayanand's cup of milk.....

The cook was listening to all this with folded hands. Swami Dayanand then turned to him and said, “Get away from this place as soon as you can. If these people once find out what you have done, your life and limb will not be safe. As for me, I forgive you. Here is some money. This will enable you to live for some days in safety and comfort. It is really a pity you should have tried to take my life for the sake of a few rupees."

Swami Dayanand then handed him some money. With this he fled to a distant place in Nepal and thus saved his life. It is said that he came back to India after some years. He was then dressed as a fakir and was sincerely ashamed of his action. To Swami Dayanand he had nothing but feelings of gratitude. “He was a good and kind man," he said. “He returned good for evil. I took his life, but he saved mine."

For some days Swami Dayanand stayed at Jodhupr and was treated by eminent physicians. But in spite of the best medical aid he grew worse and worse. His followers and disciples were alarmed at his condition and took him to Mount Abu for a change. But even there his condition did not improve. He was then

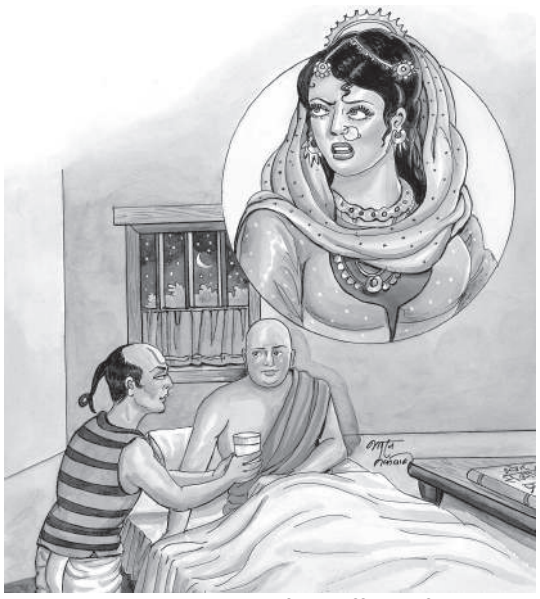

brought to Ajmer. There, after suffering from much agony, he breathed his last on the 30th of October, 1883. It was the night of Deewali when the Hindus had lighted thousands of tiny lamps. But, alas! This great light of culture and learning was extinguished that very night.

The last moments of Swami Dayanand's life were very impressive. Even though he was suffering from great pain he did not betray any signs ofit. His face retained its calm expression to the last, and on his lips played a peculiar smile. The last words that he uttered were words offaith and hope. He said, “O God, They will be done!"

To be continued.....

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध — सायंकालकृत्यप्रकरणम्

गतांक से आगे –

संस्कृत	हिन्दी
415. इदानीं तु सन्ध्यासमय आगतः सायं सन्ध्यामुपास्य भोजनं कृत्वा भ्रमणं कुरुत।	अब तो सन्ध्या समय आया, सन्ध्योपासन और भोजन करके घूमना-घामना करो।
416. अद्य त्वया कियत् कार्यं कृतम्?	आज तूने कितना काम किया?
417. एतावत्कृतमेतावदवशिष्टमस्ति।	इतना किया है और इतना शेष है।
418. अद्य कियांल्लाभो व्ययश्च जातः?	आज कितना लाभ और खर्च हुआ?
419. पञ्चशतानि मुद्रा लाभः सार्द्धद्वे शते व्ययश्च।	पांच सौ रूपये लाभ ओर अढ़ाई सौ खर्च हुए।
420. इदानीं सामगानं क्रियताम्।	इस समय सामवेद का गान कीजिये।
421. वीणादीनि वादित्राण्यानीयताम्।	वीणादिक बाजे ले आओ।
422. आनीतानि।	लाये।
423. वाद्यताम्।	बजाओ।
424. गीयताम्।	गाओ।
425. कस्य रागस्य समयो वर्त्तते?	किस राग का काल है?
426. षड्जस्य।	षड्ज का।
427. इदानीं तु दशघटिकाप्रमिता रात्रयागता शयीध्वम्।	इस समय तो दश घड़ी रात बीती, सोइये।
428. गम्यतां स्वस्थानम्।	जाओ अपने-अपने स्थान को।
429. स्वस्वशय्यायां शयनं कर्त्तव्यम्।	अपने-अपने बिछौने पर सोना चाहिये।
430. सत्यमेवमेवेश्वरकृपया सुखेन रात्रिर्गच्छेत्प्रभातं भवेत्।	सत्य है, ऐसे ही ईश्वर की कृपा से सुखपूर्वक रात बीते और सवेरा होवे।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

पृष्ठ 4 का शेष

दलित बस्तियों, झुग्गी-झोपड़ियों ....

उद्देश्य यही है कि लोग याज्ञिक बनकर अपने घर को संस्कारों से सुसज्जित करें।

दिनांक 26.09.21 आर्य समाज मंदिर, सूरजमल विहार, पूर्वी दिल्ली में यज्ञ एवं वस्त्र वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

आर्य समाज सूरजमल विहार के प्रांगण में आयोजित इस कार्यक्रम में यज्ञ के पश्चात् रिक्शा चलाने वाले चालकों और घरों में सफाई का कार्य करने वाली बहनों और माताओं को वस्त्रादि भेंट किए।

इस अवसर पर विधायक श्री ओम प्रकाश शर्मा यज्ञ के यजमान बने। समाज के प्रधान श्री अशोक गुप्ता जी और मंत्री श्री सुभाष ढींगरा जी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य शिवा शास्त्री ने उद्बोधन देते हुए कहा कि श्राद्ध वही है जो श्रद्धा से किया जाए। वो श्राद्ध जीवित व्यक्तियों के प्रति हों तो वो सार्थक होता है अन्यथा उसका कोई लाभ नहीं। उन्होंने कहा कि आपके घर में जो बड़े बुजुर्ग हैं, आपके माता-पिता हैं, सच्चे मन से, निस्वार्थ भाव से उनकी सेवा करना ही सच्चा श्राद्ध है।

सभी कार्यक्रमों के अन्त में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकल्प ‘सहयोग’ के माध्यम से उपस्थित जरुरतमन्द, गरीब, असहाय सभी लोगों को वस्त्रादि का वितरण किया गया।

आपका योगदान - ‘सहयोग’ के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें, हम उसे हर जरूरतमंदों तक पहुँचाएंगे।

आप हमें ‘वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि’ सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता है-

आर्य समाज मन्दिर,
डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी,
निकट फिल्मिस्तान,
दिल्ली-110007

श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर में योगसाधना एवं स्वाध्याय शिविर

श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर की ओर से ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में दिनांक 3 अक्तूबर से 10 अक्तूबर, 2021 तक योग साधना शिविर एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी आशुतोष परिव्राजक जी द्वारा ध्यान, उपासना, संध्या, शंका समाधान डॉ. वेदपाल जी द्वारा, ज्ञान कर्म उपासना आत्मनिरीक्षण विषय पर आचार्य चन्द्रेश जी, संध्या मन्त्रादि उच्चारण शुद्धि आचार्य अंकित प्रभाकर जी द्वारा एवं आसन व्यायाम श्री यतीन्द्र शास्त्री जी द्वारा कराए जाएंगे।

- कन्हैया लाल आर्य, मन्त्री

स्थापना दिवस पर संस्कृत शिक्षकों एवं छात्रों का सम्मान

संस्कृत के संरक्षण एवं संवर्धन में 2009 से कार्यरत संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली ने अपना 12वां स्थापना दिवस समारोह ऑनलाइन आयोजित किया । इस समारोह में 14 राज्यों के संस्कृत शिक्षकों का संस्कृत विषय में उत्तम परीक्षा परिणाम देने के लिए सम्मानित किया गया। इस समारोह का प्रथम भाग संस्कृत-दिवस के अवसर पर आयोजित किया गया था, जिसमें 210 संस्कृत प्रवक्ताओं का सम्मान किया गया और 11 सितंबर को स्थापना दिवस के अवसर पर संस्कृत के 600 प्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं का सम्मानित किया गया। स्थापना दिवस के अवसर पर एलकेजी से लेकर स्नातक तक के विद्यार्थियों के लिए संस्कृत गीत, स्तोत्र एवं श्लोक उच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। जिसमें संपूर्ण भारत से 300 बच्चों ने भाग लिया। 30 चयनित विद्यार्थियों को नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया । मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति के वी सुब्बारायडु, सारस्वत अतिथि के रूप में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर प्रमोद कुमार शर्मा उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. ब्रजेश गौतम, अध्यक्ष संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली ने की।

शोक समाचार

स्वामी चन्दवेश जी महाराज का निधन

आर्यसमाज के महान वरिष्ठ संन्यासी, वैदिक संन्यास आश्रम, दयानन्द नगर, गाजियाबाद के प्रधान पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज का 29 सितम्बर, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार सायं 4 बजे हिंडन नदी शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक ... को सम्पन्न होगी।

श्रीमती निर्मला साहू का निधन – आर्यसमाज मदनगीर, नई दिल्ली के वरिष्ठ सदस्य श्री सोहन लाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला साहू जी का 66 वर्ष की आयु में 28 मई, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ हरिद्वार में सम्पन्न हुआ।

मास्टर जयबीर आर्य जी का निधन – आर्यसमाज मदनगीर, नई दिल्ली के वरिष्ठ सदस्य मास्टर श्री जयबीर आर्य जी का 70 वर्ष की आयु में 17 जून, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार दक्षिण पुरी शमशानघाट पर वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

श्री देशराम जी का निधन – आर्यसमाज मदनगीर, नई दिल्ली के वरिष्ठ सदस्य श्री देशराम जी का 92 वर्ष की आयु में 17 सितम्बर, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार दक्षिण पुरी शमशानघाट पर सम्पन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

पृष्ठ 2 का शेष

देश में अवैध धर्मांतरण का मौलाना ....

साथ इंटेलीजेंस रिपोर्ट के अनुसार मौलाना कलीम सिद्दीकी अवैध धर्मांतरण के कार्य में लिप्त हैं और विभिन्न शैक्षणिक और सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं की आड़ में अवैध धर्मांतरण का कार्य देशव्यापी स्तर पर किया जा रहा है। साथ ही जिन संगठनों ने उमर गौतम से संबंधित ट्रस्ट को फंडिंग की थी उन्हीं स्रोतों से मौलाना कलीम के ट्रस्ट को भी अनियमित रूप से भारी मात्रा में फंडिंग की गई है। अभी तक की जाँच के बाद उनके खाते में एकमुश्त डेढ़ करोड़ रुपये बहरीन से आए हैं और कुल तीन करोड़ रुपये विभिन्न स्रोतों से आए हैं।

सिर्फ अरविन्द ही नहीं पिछली जुलाई में नैनीताल के युवक नितिन पन्त के इस्लाम कबूलने का मामला सुर्खियों में आया था। 2010 से नितिन पंत का ब्रेन वाश करने का काम शुरू हुआ था। इसके बाद राजस्थान स्थित भिवाड़ी में पन्त को हिन्दू से मुस्लिम बनाया गया और मेवात में मदरसे में लाकर उसे इस्लामिक तौर तरीके सिखाये गए। बताया जा रहा है कि नितिन पन्त अकेला नहीं था, उसके साथ कई हिन्दू युवक-युवतियां और भी थे, जिन्हें विदेशों में नौकरी दिलाने के लालच में मुस्लिम बनाया गया था। इस्लामीकरण के इस काम में मौलाना कलीम सिद्दीकी के बेटे अहमद और असद उनकी बेटियां आसमां और मसमां भी शामिल रहती हैं। नितिन पन्त जब हाल ही में उनके चंगुल से निकला तो उसने बालाजी घाट, सहारनपुर में किसी अतुल तुली के सानिध्य में हिदू धर्म में वापसी की थी।

खैर, मौलाना अब पुलिस कस्टडी में है मामले का पर्दाफास भी हो गया पर सवाल ये है कि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हिन्दुओं की धर्मांतरण के नाम पर एक फसल सी काटी जा रही है। एक तरफ ईसाई मिशनरीज है उनके पादरी हैं दूसरी तरफ इस्लाम के कथित विद्वान और मौलाना बैठे हैं। ऐसे में धर्मांतरण की ये दो बड़ी कम्पनी कब तक इस देश में चलेंगी, क्या कोई राष्ट्रीय कानून आएगा? या आखिर कब तक चलेगा ये मौलानाओं का धंधा?

- सम्पादक

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज पश्चिमपुरी नई दिल्ली को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जो समस्त वैदिक संस्कार पूर्ण निपुणता के साथ सम्पन्न करा सकें। आर्यसमाज की ओर से आवास एवं बिजली-पानी की व्यवस्थाएं नि:शुल्क प्रदान की जाएंगी। ऐसे महानुभावों को प्राथमिकता दी जाएगी जो परिवारों एवं क्षेत्र में अपने सामर्थ्य से संस्कार करा सकें। सम्पर्क करें- ***9910995845, 9818087360***

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज सुन्दर विहार
दिल्ली-110087

प्रधान : श्री कंवरभान खेत्रपाल
मंत्री : श्री अमरनाथ बत्रा
कोषाध्यक्ष : श्री प्रह्लाद सिंह आर्य

आर्य समाज कीर्ति नगर
देवेन्द मार्ग, नई दिल्ली-110015

प्रधान : श्री ओम प्रकाश आर्य
मंत्री : श्री विनीत बहल
कोषाध्यक्ष : श्री अनिल आर्य

स्त्री आर्य समाज कीर्ति नगर
देवेन्द मार्ग, नई दिल्ली-110015

प्रधाना : श्रीमती विमल बुद्धिराजा
मंत्राणि : श्रीमती आरती खुराना
कोषाध्यक्षा : श्रीमती गीता शर्मा

प्रेरक प्रसंग

एक अभूतपूर्व घटना

गतांक से आगे -

आपने वेदानुसार जीवन बिताने का व्रत लिया। खेतसी भाई ने शिवगुण भाई में यह परिवर्त्तन देखा। एक मास पश्चात् खेतसी भाई ने स्वदेश लौटने का कार्यक्रम बनाया। शिवगुण भाई ने कहा-'अभी तो मैंने कुछ कमाया नहीं। पैसे नहीं दे सकता। आप कुछ और ठहरें मैं कुछ कमाकर आपके तीन सौ चुका दूँ।

खेतसी भाई का उत्तर आर्यसमाज के इतिहास में एक स्वर्णिम घटना समझा जाएगा। आपने कहा-''मेरा रुपया अब आ गया। मैं तो तुम्हें आर्यसमाज से जोड़ने के लिए ही अफ्रीका आया था और कोई काम न था। मेरा लक्ष्य पूरा हो गया। मेरा मन गद्गद है, अब मैं जाता हूँ।''

यह आर्यसमाज के इतिहास की अभूतपूर्व घटना है कि एक आर्यपुरुष दूसरे साथी को आर्यसमाज का मन्दिर दिखाने वा आर्यसमाज में लाने के लिए अफ्रीका तक चला जाता है। वीर विप्र रक्तसाक्षी पण्डित लेखरामजी होते तो खेतसी भाई की लगन देखकर उसे छाती से लगा लेते। शिवगुण भाई ने भुज कच्छ में वैदिक धर्म प्रचार के लिए अहर्निश साधना करके ऐसी सफलता पाई है कि आज गुजरात में आर्यों की कुल संख्या का आधा भाग शिवगुण भाई पटेल की बिरादरी का है इनके तपोबल से और वेद, ईश्वर, यज्ञ वा गौ के प्रति इनकी श्रद्धा के कारण उच्च शिक्षित युवक, प्रतिष्ठित देवियाँ तथा पुरुष वैदिक धर्म के प्रचार में जुट गये हैं।

आपने विक्रम संवत् 1987 में स्वदेश लौटकर ग्राम में दैनिक यज्ञ चालू कर दिया। इससे सत्पन्थी पुन: भड़के। आपका प्रचण्ड बहिष्कार हुआ। आपका यज्ञोपवीत उतारने के लिए ग्रामों की पंचायत बैठी। यह एक लम्बी कहानी है।

अटल ईश्वर-विश्वासी, यज्ञ-हवन तथा सन्ध्योपासना के नियम का दृढ़ता से पालन करनेवाले शिवगुण भाई पर तब जो विपत्तियाँ आई उन्हें सुनकर नयन सजल हो जाते हैं। साधनहीन, परन्तु सतत साधनावाले ऋषिभक्त शिवगुण इस अग्नि-परीक्षा में पुन: विजयी हुए।

एक और घटना का उल्लेख कर इतिहास के इस पृष्ठ को हम यहीं समाप्त करते हैं। नैरोबी में सरदार पटेलजी के ग्राम करमसद के एक पटेल पुरुषोत्तम भाई मोती भाई भी समाज में आते थे। चार-पाँच और भी गुजराती आर्यसमाज के सभासद् थे। पुरुषोत्तम भाई ने एक मास पश्चात् इन्हें कहा-'' तुम मेरे गुजराती भाई लगते हो, परन्तु मुझसे मिलते ही नहीं?'' तुम कैसे आर्य बन गये? पुरुषोत्तम भाई साहित्यकार विद्वान् थे। खेतसी भाई व शिवगुण भाई ने अपने आर्य बनने की कहानी सुना दी। पुरुषोतम भाई आनन्दित हुए। आपने शिवगुण भाई पर वैदिक धर्म का और गाढ़ा रंग चढ़ा दिया। पुरुषोत्तम भाई भी रेलवे में थे और महात्मा बद्रीनाथजी के सत्संग से पुरुषोत्तम भाई आर्य बने।

पुरुषोत्तम भाई को भी सत्पन्थ का पूरा ज्ञान था। यदि मैं भूल नहीं करता तो वे भी पहले सत्पन्थी ही थे। यदि आर्यसमाज के संस्कार-विचार करमसद की भूमि तक न पहुँचते तो सरदार पटेल और विट्ठल भाई पटेल जैसे रत्न मातृभूमि को क्योंकर मिलते।

सूपा गुरुकुल में सरदार पटेल ने एक बार कहा था-ऋषि दयानन्द मेरे गुरु थे। विट्ठल भाई पटेल भी ऋषि को अपना गुरु मानते थे। ऋषि के विचारों से अनुप्राणित होकर ये दोनों नररत्न मातृभूमि के गौरव-गगन पर चन्द्र बनकर चमके।

श्री शिवगुण भाई का वैदिक धर्म अनुराग तो आर्यों के लिए प्रेरणाप्रद है ही, परन्तु खेतसी भाई जैसे लग्नशील आर्य ने ऐसी अनूठी तड़प का परिचय न दिया होता तो शिवगुण भाई-सा सपूत भी आर्यसमाज को न मिल पाता।

नारायण भाई पटेल और श्री देवजी जगमाल जी जाडेजा जैसे आर्यपुरुष गुजरात में विशेषरूप से भुज कच्छ में 'जो इनका क्षेत्र था) अपनी स्थायी छाप न छोड़ सके। वे दोनों विद्वान् थे। आरम्भिक आर्यपुरुष थे, परन्तु इनमें एक ही कमी थी। वे वेद धर्म, वेद धर्म की रट तो लगाते थे, परन्तु उनके अपने जीवन में वैदिक सन्ध्योपासना यज्ञ का नियम न था। यदि वे भी दृढ़ता से इसका पालन करते व कराते तो उन्हें विशेष सफलता मिलती। इन प्रणवीरों के भी आर्यगण ऋणी हैं। इनकी सेवा व साहित्य पर आगे कभी प्रकाश डाला जाएगा।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 27 सितम्बर, 2021 से रविवार 3 अक्तूबर, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 30/09-01/10/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 सितम्बर, 2021

पृष्ठ 5 का शेष

लोग मारे गए थे, के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते हुए उन्होंने रेल मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था। देश एवं संसद ने उनके इस अभूतपूर्व पहल को काफी सराहा। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने इस घटना पर संसद में बोलते हुए लाल बहादुर शास्त्री की ईमानदारी एवं उच्च आदर्शों की काफी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि उन्होंने लाल बहादुर शास्त्री का इस्तीफा इसलिए नहीं स्वीकार किया है कि जो कुछ हुआ वे इसके लिए जिम्मेदार हैं बल्कि इसलिए स्वीकार किया है क्योंकि इससे संवैधानिक मर्यादा में एक मिसाल कायम होगी। रेल दुर्घटना पर लंबी बहस का जवाब देते हुए लाल बहादुर शास्त्री ने कहा; "शायद मेरे लंबाई में छोटे होने एवं नम्र होने के कारण लोगों को लगता है कि मैं बहुत दृढ नहीं हो पा रहा हूँ। यद्यपि शारीरिकरूप से में मैं मजबूत नहीं हूं लेकिन मुझे लगता है कि मैं आंतरिक रूप से इतना कमजोर भी नहीं हूँ।"

अपने मंत्रालय के कामकाज के दौरान भी वे कांग्रेस पार्टी से संबंधित मामलों को देखते रहे एवं उसमें अपना भरपूर योगदान दिया। 1952, 1957 एवं 1962 के आम चुनावों में पार्टी की निर्णायक एवं जबर्दस्त सफलता में उनकी सांगठनिक प्रतिभा एवं चीजों को नजदीक से परखने की उनकी अद्भुत क्षमता का बड़ा योगदान था। तीस से अधिक वर्षों तक अपनी समर्पित सेवा के दौरान लाल बहादुर शास्त्री अपनी उदात्त निष्ठा एवं क्षमता के लिए लोगों के बीच प्रसिद्ध हो गए। विनम्र, दृढ, सहिष्णु एवं जबर्दस्त आंतरिक शक्ति वाले शास्त्री जी लोगों के बीच ऐसे व्यक्ति बनकर उभरे जिन्होंने लोगों की भावनाओं को समझा। वे दूरदर्शी थे जो देश को प्रगति के मार्ग पर लेकर आये। लाल बहादुर शास्त्री महात्मा गांधी के राजनीतिक शिक्षाओं से अत्यंत प्रभावित थे। अपने गुरु महात्मा गाँधी के ही लहजे में एक बार उन्होंने कहा था "मेहनत प्रार्थना करने के समान है।" महात्मा गांधी के समान विचार रखने वाले लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ पहचान हैं।

प्रतिष्ठा में,

पं. सत्यपाल पथिक जी की पुण्यतिथि के अवसर पर
श्रद्धांजलि एवं पुस्तक विमोचन

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक जी की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर आर्यसमाज मॉडल टाउन, जालन्धर में पथिक भजन एवं श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन 17 अक्तूबर,2021 को आयोजित किया जा रहा है। समारोह का शुभारम्भ प्रात: 9 बजे यज्ञ के साथ किया जाएगा। समारोह श्रीमती इन्द्रपुरी मोगा (पुरी मस्टर्ड ऑयल) की अध्यक्षता में आयोजित होगा। इस अवसर पर आर्य विद्वानों के प्रवचन, भजन एवं श्रद्धांजलि के कार्यक्रम भी होंगे।

- अरविन्द घई, प्रधान आर्यसमाज

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान
श्री शिव कुमार मदान जी
हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य मनोनीत

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान जी को भारत सरकार द्वारा नवीन और नवीकरणीय उर्जा मन्त्रालय में हिन्दी सलाहकार समिति का माननीय सदस्य मनोनीत किया गया है।

माननीय श्री शिव कुमार मदान जी को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह